आपातकाल में सृजन फुलवारी

लीना सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

लीना सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-212-8
संपादक -डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र संदीप कुमार सोनी -, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.)481331
दूरभाष253159-07633 (.कार्या) -
मोबाईल9424765259 -
ईमेल -antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट -www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण2020 -, लीना सुराना
मूल्य -5रूपये 0.00
मुद्रकशैलू कम्प्यूटर्स -, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY LEENA SURANA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	किस्मत की रणनीति	6
2.	दोस्त मेरा मर चुका है	7
3.	गुरु की शरण	8
4.	आसान और मुश्किल	9
5.	बस पलभर	10
6.	पतन का कारण	11
7.	नकारात्मक में भी सकारात्मक	12
8.	कैसे?	13
9.	वास्तविकता	14
10.	यही सत्य है	15
11.	हाथी के दाँत	16
12.	माँ	17
13.	खास बात	18
14.	आंसुओं की कीमत	19
15.	क्यूँ चले गए?	20-21

किस्मत की रणनीति

अपनी भाग्य के निर्माता, हम स्वयं होते है,
फिर अच्छा हो या बुरा जिम्मेदार भी हम खुद होते है।

लिखता नहीं कोई किसी का लेख,
बस अपने मन और भावनाओं को देख।

हमारे मन की मलिनतासे ही, हमारी गिरावट होती हैं,
और हम ये समझते है कि किसी और की ये करनी है।

गिरना तो सबकी किस्मत में लिखा होता है
लेकिन.....
असली योद्धा तो वह ही होता है
जो किस्मत की रणनीति ही पलट के रख देता है।

दोस्त मेरा मर चुका है

वो देर रात तक जागना,
खूब सारी बातें करना,
बात करते करते लड़ाई करना,
फिर एक दूसरे को जोर-जोर से मारना,
यह सब किस्सा पुराना हो चुका है,
क्योंकि दोस्त मेरा मर चुका है।

वो अनजानी सड़कों पर चलते रहना,
ऊटपटांग हरकतें करते रहना,
चार लोग जब तुम्हें अजीब तरीके से देख रहे हो,
तो हमारा उन्हें देखकर ज़ोर-ज़ोर से हंसना।
ऐसा रास्ता हमेशा के लिए खो चुका है,
क्योंकि दोस्त मेरा मर चुका है।

पहाड़ का राई कर देना,
फालतू के solutions एक दूसरे को देना,
आँसुओं को खिल-खिलाती हँसी में बदल देना,
फिक्र को हवा में गुम कर देना,
अब तो मुश्किलों का पहाड़ बन चुका है,
क्योंकि दोस्त मेरा मर चुका है।

कुछ जिम्मेदारियों ने, कुछ मजबूरियों ने,
कुछ रिश्तों ने, कुछ वक्त ने,
सबने मिलकर मेरे दोस्त का कत्ल कर दिया,
मेरे आँसुओं ने भी मेरा साथ छोड़ दिया,
मेरी आँखों ने भी इंतजार करना छोड़ दिया,
ये दिल जान चुका है
कि दोस्त मेरा मर चुका है।

गुरु की शरण

शब्द नहीं हैं मेरे पास,
ना ही कुछ औकात है मेरी,
फिर भी इस छोटे से मुख से,
करने चली हूँ तारीफ़ तेरी।

तू ज्ञान का सागर है
और करूणासागर भी,
मेरे इस छोटे से जीवन का
सबसे बड़ा आधार भी।

अंधकार था जीवन में
तब मैंने दिया तैयार किया,
तुने स्नेह की ज्योत से
उसे प्रकाशित किया।

माँ-बाप के बाद ही
गुरु का नाम क्यों आता है भला,
अरे! गुरु ने तो
मृत्यु जैसे जीवन को महोत्सव बना डाला।

आसान और मुश्किल

आसान है, लोगों को आंकना,
पर मुश्किल है, उन्हें अपनाना।

आसान हैं व्यंग करना, ताने कसना,
पर मुश्किल है, जैसे लोग है वैसे उन्हें समझना।

आसान है, अपनी गलतियों का दोषी औरों को मानना,
पर मुश्किल है, अपनी भूल को स्वीकार करना।

आसान है, झूठ का मुखौटा पहनना,
पर मुश्किल है, सादगी भरा जीवन जीना।

आसान है, चुपचाप बैठ जाना,
पर मुश्किल है, चुनौतियों का सामना करना।

आसान है, डरकर भाग जाना,
पर मुश्किल है, धैर्य और शौर्य के साथ दृढ़ खड़े रहना।

बस पलभर

न
किसी के
मिलने की खुशी,
न
किसी के
छूट जाने का डर,

मै तो
वो पंछी हूँ,
जिसे
रहना है बस पलभर।

जी रही हूँ
अपनी मस्ती में
हर दिन,
कौन जाने,
कब खत्म हो जाएगा ये कल।

मै तो
वो पंछी हूँ,
जिसे
रहना है बस पलभर।

पतन का कारण

सम्मान, सफलता और यश;
इन्हें पचाना
हर किसी के बस की बात नहीं है।

अगर पच जाए
तो मानव समतापूर्वक
आसमान की ऊँचाईयों को
छूता चला जाता है।

अगर ना पचे
तो मानव को अहंकार जैसी
भयानक बीमारी घेर लेती है;
और
वही उसके पतन का
कारण बन जाती है।

नकारात्मक में भी सकारात्मक

मुझे खुशी होती है,
जब लोग मेरी पीठ पीछे बात करते हैं,
वह अपनी कायरता और मेरे शौर्य को दर्शाते हैं।

अच्छा लगता है,
जब कोई मुझे नीचा दिखाने की कोशिश करता है,
वह अपनी तुच्छता और मेरी महानता स्वयं ही दर्शा देता है।

गर्व होता है स्व पर,
जब कोई धोखा देता है,
वह अपनी ही मूर्खता से मुझे खो देता है।

चित्त प्रसन्न हो जाता है,
जब कोई अपनी ऊर्जा मुझे मुश्किलो में उलझाने में लगा देता है,
जबकि हर प्रतिकूलता मेरे लिए अनुकूल अवसर बन जाती है।

बुरा लगता है उनके लिए
जो लोग मुझ पर भार डालना चाहते हैं,
पर अप्रत्यक्ष रुप से मेरे कर्मों को हल्का करते चले जाते हैं।

कैसे?

गुज़र गयी मै घोर अंधेरे रास्तों से, कैसे?
चीर दी पर्वत जैसी मुश्किलें, कैसे?

अटल रही भयंकर तूफान में, कैसे?
सह गयी सूरज की तपती किरणें, कैसे?

ज़ख्मों को दिल में छुपाकर मुस्कुराई, कैसे?
टूटकर भी सबको सँभाल लिया, कैसे?

धोखा खाकर भी भूला दिया, कैसे?
दुश्मनों को भी दोस्त मान लिया, कैसे?

सब साथ छोड़ गए, फिर भी डटकर खड़ी रही, कैसे?
एक तेरा हाथ जो तूने मेरे सिर पर रखा है,
बस वही सारा जहाँ हो, जैसे।

वास्तविकता

यह तो बस व्यवहारिकता है
कि कोई अपना है, कोई पराया है।

वास्तविकता तो यह है
कि सारा जग एक समान है।

न कोई अपना, न ही कोई पराया,
हम स्वयं के है और स्वयं हमारा।

सच्चा दोस्त किसे कहते है?

सच्चा दोस्त वह है,
जो आपको फोन करके
4-5 गालियाँ दे,
और कहे
साली हैप्पी बर्थ डे बोल दे,
आज मेरा जन्मदिन है।

यही सत्य है

जब आत्मा को आत्मा से
प्रेम हो जाए,
जब आत्मा को आत्मा की सुंदरता का
ख्याल आ जाए,
जब आत्मा को आत्मा के
अनंत वीर्य और अनंत सुख की
अनुभूति हो जाए,
तब बाहर के घोर तूफान
और भयंकर दावानल भी
आत्मा के भीतर की
मस्ती को खत्म नहीं कर सकते।

यही सत्य है!

हाथी के दाँत

कुछ लोग हाथी की तरह होते हैं।
दिखाने के दाँत कुछ और, खाने के दाँत कुछ और होते हैं।

आपके सामने तो कहेंगे बेटे! बेटे!
और पीठ पीछे आपको जम के पीटे।

बाहर से तो बाँधते है तारीफ़ो के पुल,
पर उनका अंतर कहता है कि बना दिया इसको फूल (fool)।

मुस्कुराहट भी इनकी जहरीली हो जाती हैं,
क्योंकि भीतर मे क्रोध, मान और ईर्ष्या खिलने लग जाती हैं।

सामने वाला भी समझ जाता है कि
नकली है इनकी मुस्कुराहट,
झूठे हैं ये तारीफों के पुल।

पर चुप रहता है और सोचता है कि
कौन लगे इनके मुँह?
बनने दो इन्हें फूल।

माँ

सीने पर पत्थर रखकर वो सदा मुस्कुराती है,
अपनी इस हँसी से भीतर के दर्द को छुपाती है।

समता और सहनशीलता है उसकी सबसे बड़ी कला,
इसलिए तो है वह पुरी दुनिया से जुदा।

उसका ज्यादा प्यार कहीं मुझे बिगाड़ न दे,
और आगे चलकर जीवन में कोई मुझे ताने न दे,
इसलिए खुद ही सख्त हो जाती है वह,
अनचाहे मन से.....
अपने दिल के टुकड़े को खूब डाँट लगाती है वह।

अच्छे काम करोगे तो तुम्हारा ही नाम होगा बेटा,
गलत काम करोगे तो माँ ही बदनाम होगी बेटा।
यह कह कहकर जिंदगी के हर पाठ सिखा गयी माँ,
अब समझ में आया जब मै स्वयं बन गयी माँ।

हम तो बस एक दिन मनाते हैं माँ का,
वह तो जीवन बनाती है अपनी संतान का।
आज अपने साथ जोड़ लिया है उसका नाम,
क्योंकि यह कविता है सिर्फ माँ के नाम।

खास बात

संयुक्त परिवार की यह सबसे खास बात है
यहाँ पर सारी स्त्रियां हमारी माँ है।
दादी माँ है, बड़ी माँ है,
मासी माँ है, चाची माँ है,
मामी माँ है, भाभी माँ है,
भुआ माँ है, बहन भी माँ है,
और माँ तो बस फिर माँ है।
यही तो हमारे परिवार की शान है,
यहाँ पर सारी स्त्रियां हमारी माँ है।

आंसुओं की कीमत

यहाँ
आंसुओं की
और रोने वालों की
कोई कीमत नहीं जनाब
यहाँ तो बस
हँसने
और हँसाने वालों की
कीमत है,
इसलिए
अपने ऑसू
अपनी आंखों में
बंद रखिये,
ये तो
सिर्फ अकेले में
बहाने के लिए हैं,
खुद को
खुद की दास्तान
सुनाने के लिए है।

क्यूँ चले गए?

मिर्ची जैसा तेज उनका गुस्सा,
पर गुड़ जैसा मीठा था उनका आशीर्वाद।
खुशी रहो जी, सदा खुशी रहो!
टीवी, पार्टी, पिक्चर, मोबाइल,
जोर-जोर से हँसना
उनको बिल्कुल पसंद नहीं था।

दुकान के लड़के हो, बहु हो या फिर बेटा,
सबके लिए रुल एक जैसा था,
अपनी मर्यादा में रहो और सदा मुस्कुराते रहो!

मंदिर से जब हम लोग आते तो पूछते
भगवान मिले क्या?
जब हम चुपचाप सिर झुकाकर खड़े हो जाते तो कहते,
कैसे मिलेंगे भगवान?
ढूंढ रहे हो तुम जिसे मंदिर में,
वो तो है तुम्हारे अंतर में!

हाथ से पैसा ज्यादा छूटता नहीं था,
पर रविवार के दिन
एक भी भिखारी खाली नहीं जाता था।

मेरा नाम कभी नहीं लेते थे वो,
हमेशा बिन्नी कहकर बुलाते थे!
लगता था उनकी सोच काफी पुरानी थी, पर बिल्कुल नहीं क्योंकि,...
काम करने की,
सलवार सूट पहनने की परमिशन उन्होंने ही तो दी थी!

मम्मी की डाँट से हमेशा मुझे बचाते,
पर जब मैं अमय को डाँट देती तो मेरी वाट लगाते,

रात को 12 बजे आलू की सब्जी और कढ़ाई की पूरी बनवाते,
अगर मूड बदल जाए तो वापस भी रखवाते,

रातभर हाथ-पैर दबवाते,
फिर आदतन मुँह अंधेरे चाय बनवाते,
पर जब हमारा थका हुआ चेहरा देखते तो कहते,
समझ सकता हूँ मैं तकलीफ को तेरी,
पर क्या करूँ बेटा आदत नहीं मजबूरी है मेरी।

ज्यादा आना-जाना कहीं करते नहीं थे,
न ही उनके थे कोई मीत,
हमेशा सिखाते, सच्चाई और ईमानदारी ही है,
इंसान की सबसे बड़ी जीत।

न पूजा, सामायिक, व्रत, नियम, पचक्खाण,
पर हृदय से सदा निकलती 'बोल भगवान की जय' की आवाज़!

मम्मी ने तो अपनी मृत्यु को महोत्सव बना दिया,
पर आपकी मृत्यु ने हमें अनाथ बना दिया,
राकेश बिन्नी, अमय की आवाज़ से गूंजता था हमारा घर,
पर अब उनकी आवाज़ से गूंजेगी राकेश, लीना, अमय की धड़कन!

सुनसान घर को देखकर मन नहीं लगता,
छोटे से कंधों पर बड़ी जिम्मेदारियाँ देकर क्यों चले गए?
हमने आपका ध्यान नहीं रखा था क्या, जो आप रुठ गए?

जाना ही था तो कुछ दिनों के लिए चले जाते,
ऐसी जगह क्यूँ गए जहां से लोग लौट के कभी नहीं आते।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

लीना सुराना

धनराज कॉम्पलेक्स
पहला माला, मेन रोड़
बालाघाट (म.प्र.)

Email- leenarakeshbaid@gmail.com
Mobile - 9806260410

अगर भावनाओं और विचारों का समंदर अंतर में बह रहा हो तो शब्दों की लहरें अपने आप ही उठ जाती हैं। इस आपातकाल मे काफी समय मिला आत्मनिरीक्षण करने का और स्वयं को बेहतर तरीके से समझने का। लेख के माध्यम से, हम अक्सर अनकही कह जाते हैं। जब उन अनकही बातों को कोई अनमोल बना दे, तब हम और भी उत्साह और उमंग से भर जाते है। अंतरा शब्दशक्ति ने जब मेरा पहली कविता का प्रकाशन किया तब बहुत ही आनंद की अनुभूति हुई। डॉ. प्रीति समकित सुराना के लेख और कविताएँ हमेशा मुझे प्रभावित करते रहे हैं। इस आपातकाल के दौरान उन्होंने और मेरे जीवनसाथी राकेशजी सुराना ने मुझे काफी प्रेरित किया लिखने के लिए, सबका दिल से आभार व्यक्त करती हूँ, अंतरा शब्दशक्ति दिन दूनी रात चौगुना तरक्की करे यही दुआ करती हूँ।

धन्यवाद!

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-212-8

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/